दिल्ली में 'श्री बीतक साहब' और मेरे भाव

-दिनेश चोपड़ा (पिंकी), दिल्ली

क्यों मेहर मुझ पर भयो, ए थो दिल में शक।
जानी मौज मेहबूब की, वो देत आप मा क॥

ये मेहर केवल मुझ पर ही नहीं, हम पूरे दिल्ली सुन्दरसाथ पर हुई तथा 'श्री बीतक साहब' का शुभारम्भ १ नवम्बर १९८१ को श्रीराज जी की मेहर से 'प्रिय भापा जी' (श्री जगदीश चन्द्र आहूजा जी) द्वारा हुआ। पहले दिन ही काफी नये सुन्दरसाथ जी थे और मजे की बात यह कि जिस किसी भी सुन्दरसाथ के दिल में किसी तरह का प्रश्न होता वह 'भापा जी' से पूछे बिना ही चर्चा में ही उसका समाधान हो जाता।

प्रतिदिन चर्चा रात को ७-४५ से लेकर ९-१५ तक होती और ७-३० से शुरू हो जाता था प्रोफेसर प्रकाश जी की सुरीली आवाज का जादू, वीना बहन जी की जोरदार थाप से ढोलक, पूप्पू सेठी की कड़कती ताली और पूरे सुन्दरसाथ जी की ताल में ताल मिलाती हुई तालियाँ। आज भी जब वह नजारा याद आता है तो हृदय आत्मविभोर हो जाता है। पहले पूरे पद्रह मिनट आनन्द और फिर डेढ़ घन्टा भरपूर आनन्द तथा ज्ञानमयी चर्चा। इस चर्चा के साथ एक नियमबद्ध जीवन प्रारम्भ हो जाता है सबका। प्राय: सभी सुन्दरसाथ जी दिन में जल्दी से सब कार्यों से निवृत होकर इन्तजार करते हैं घर से निकलने का ताकि वे समय पर पहुँच कर अपने पिया जी की वाणी का अमृतपान कर सकें।

कई सुन्दरसाथ जी दो-दो या तीन बसें भी बदल कर आते थे (धन्य हैं वे सुन्दर साथ और आते भी क्यों न)। आप तो जानते ही हैं दिल्ली की बसों का रश और धक्के वो भी शाम के समय, जब सब दफ्तर व दुकानों के बन्द होने का समय होता है। फिर भी जब किसी सुन्दरसाथ से इस बात का जिक्र होता तो वे हँसते हुए कहते 'ये धक्के तो हमें झूला झूलने का सा आनन्द देते हैं। किसी भी तरह से प्रत्येक सुन्दरसाथ समय पर पहुँचता है पहुँचता भी क्यों न ? सब को तड़प है अपने पियु की वाणी की।

Nijanand App

अब बात आती है चर्चा के बीच की। 'भापा जी' ने तीन प्रकार के लोग बताए– (१) सूँघू (२) डूँगू (३) ऊँघू।

सूँघू वे जो केवल किसी ज्ञान को सिर्फ इसलिए सुनते हैं कि यह क्या है और इनसे लाभ क्या है ?

डूँगू–वे जो किसी भी ज्ञान की गहराई जानने की कोशिश करते हैं और ज्यादा से ज्यादा प्राप्त कर लेना चाहते हैं और जो कुछ ज्ञान भी प्राप्त करते हैं उसका भरपूर आनन्द उठाते हुए उस पर अमल करने का भरपूर प्रयास करते हैं। मेरे विचार में सभी सुन्दरसाथ जी इस डूँगू विभाग के प्रतिनिधि हैं। एक-दो मेरे जैसे भी जो ऊँघू विभाग के प्रतिनिधि हैं, जिन पर माया चर्चा में ही अपना प्रभाव डालने की कोशिश करती है और फिर सहारा ढूँढ़ा जाता है दीवारों का ताकि टेक लगा कर बैठा जाए और फिर 'भापा जी' की नजरें देख लेती हैं और बीच में ही जयकारा बोला जाता है 'बोलो श्री प्राणनाथ प्यारे की जय'। फिर से सभी सतर्क हो जाते हैं और फिर तो तंद्रा चर्चा के बाद ही भंग होती है।

कहते हैं कि बर्तन को माँजने से वह चमकदा दमकता है, ठीक उसी तरह ही जब माया रूपी कचरा हमारे शरीर व आत्मा रूपी बर्तन पर जम जाता है तो 'विम' अर्थात् श्रीमुख वाणी के मंथन द्वारा खूब मल मल कर अगले साल तक के लिए ऐसा चमका दिया जाता है कि उसमें माया रूपी गन्दगी का कोई कण न बचे। इस माया में रहते हुए जहाँ हम चर्चा से कुछ दूर हुए कि माया ने अपना काला रंग जमाना शुरू किया। हमारा मायावी शरीर अनमोल हीरा है जिसमें विभिन्न रसायन अर्थात् वेद, कुरान शरीफ, गीता, भागवत, रामायण व बाइबल से उदाहरणों व पहचानों द्वारा अपने निज मूल वतन की तथा अपनी पहचान कराई जाती है कि हम क्या हैं ? इस माया में क्यों आए हैं ? तथा कहां हमारा ठिकाना है ? इतना सब होने के पश्चात् वाणी की आंच द्वारा हम ऐसी वस्तु बन जाते हैं कि माया में रहते हुए भी माया फीकी लगती है। अरे मैं तो धारा प्रवाह में बहता हुआ कहाँ चला गया आइए आपको वापस दिल्ली लिए चलता हूँ जहाँ श्री मुख वाणी के बाद सब सुन्दरसाथ जी प्रसाद ग्रहण कर अपने घरों की ओर प्रस्थान करते हैं।

अब याद आता है रास्ते का दृश्य। लाला जयचन्द गिरधर जी के घर से बस स्टाप तक का रास्ता। इस रास्ते में एक ही बस में जाने वालों की टोली सी बन जाती है और सुनी गई चर्चा के बारे में बातें होती हैं। एक हमारा ही ग्रुप ऐसा था जो चर्चा के आनन्द के बाद पूरे रास्ते हँसी मजाक करता हुआ चलता है।

Nijanand App

इसी तरह फिर दूसरा दिन और फिर वही दिनचर्या कीर्तन, चर्चा, प्रसाद और स्टाप तक का समय। पूरे ३५ दिन के बाद आता है वह ६ दिसम्बर का महत्वपूर्ण दिन जब समाप्ती पूजन होता है, तारतम दिया जाता है और बहुत जोश के साथ सूचना दी जाती है कि दिल्ली में अगले साल बीतक होगी। तत्पश्चात् भण्डारे में सभी सुन्दर साथ प्रसाद ग्रहण कर भरे हृदय से अलग होते हैं। करुणामय दृश्य—चारो ओर सभी के हृदय में दो भाव हैं। खुशी इस बात की कि 'बीतक साहब' का निर्विघ्न ३६ दिन का आनन्द और बिछुड़ने का दृश्य। इसका वर्णन मेरी लेखनी के वश की बात नहीं।

सब सुन्दर साथ के चरणों में मेरा व दिल्ली सुन्दर साथ का प्रणाम !

(पृष्ठ १ का शेषांश)

खतौली नगर के सुसज्जित विशाल मैदान में अपार जनसमूह ने जिस शान्ती से सारे कार्यक्रम को सुना व समझा, वह अपने आप में एक मिसाल थी। यह एक वास्तविकता है कि विभिन्न धर्मों में बटे, जात-पात, ऊँच-नीच, स्वार्थ, संकीर्णता जैसे संक्रामक रोगों से ग्रस्त आज के विश्व को श्री निजानन्द ज्ञान जिसे 'विश्व धर्म' की संज्ञा भी दी जा सकती है, की बहुत बड़ी आवश्यकता है और निजानन्द पद्धति ही में मानव-मात्र का कल्याण निहित है पर यह भी एक वास्तविकता ही है कि जिनके पास यह ब्रह्म ज्ञान है वह उसे अपनी धरोहर समझ कर उसे अपने आप तक ही सीमित रखे हुये हैं—काश अपने आपको ब्रह्म मुनि कहने वाले अपनी अन्तात्मा में झाँक कर अपना सही स्वरूप देखें और इस ब्रह्म ज्ञान को जन-जन तक पहुँचाने के लिए सांसारिक सुखों का त्याग कर बिखरे हुए समाज को संगठन के सूत्र में पिरो कर सुन्दर साथ का मार्ग दर्शन करें।

Nijanand App